अरब में फँसा अमेरिकी साम्राज्यवाद के रथ का चक्का

● लता

अक्सर ऐसा देखने में आया है कि विश्व साम्राज्यवाद के सारे अन्तरविरोध भौगोलिक और राजनीतिक रूप से एक बिन्दु पर केन्द्रित हो जाते हैं। कोई एक क्षेत्र तमाम अन्तरविरोधों की एक एकल गाँठ जैसा बन जाता है। अरब विश्व पिछले कुछ दशकों से ऐसी ही एक परिघटना का साक्षी बन रहा है। अमेरिकी साम्राज्यवाद के पाँव अरब के रेगिस्तान में गहरे से गहरे धँसते जा रहे हैं। वह जितना निकलने की कोशिश करता है, उतना ही फँसता जाता है। ऐसा भी नहीं है कि अमेरिका मूर्खता में मध्य-पूर्व में फँस गया हो। दिक्कत यह है कि अमेरिकी अर्थव्यवस्था बुरी तरह पेट्रोल पर निर्भर है। तेल के बिना पूरी अर्थव्यवस्था डगमगा जाएगी। दुनिया के कुल तेल उपभोग में सबसे ज़्यादा हिस्सा अमेरिका का ही है। नतीजतन, मध्य-पूर्व के तेल भण्डार पर प्रभुत्व कायम करना अमेरिका की एक मजबूरी बन जाता है। इस आर्थिक मजबूरी के अलावा एक राजनीतिक मजबूरी भी है। अगर अमेरिका मध्य-पूर्व में अपना प्रभुत्व कायम नहीं करता तो कोई और साम्राज्यवादी शक्ति यह काम करेगी। इस सूरत में कहा जा सकता है कि यह काम रूस-चीन धुरी करेगी। रूस ऐसे प्रयासों में लगा भी रहता है। इसके अलावा अमेरिकी आक्रामक साम्राज्यवादी नीतियों का गणित ही कुछ ऐसा है कि एक बार कहीं नाक घुसा देने के बाद अमेरिका के लिए नाक निकाल पाना असम्भव हो जाता है।

विश्व साम्राज्यवाद के अन्तरविरोध जो अरब विश्व में लम्बे समय से एक गाँठ के रूप में नज़र आ रहे हैं, आज विस्फोटक स्थिति में पहुँच गए हैं। एक ओर इराक में प्रतिरोध-संघर्ष थमने का नाम नहीं ले रहा है, तो दूसरी ओर फ़िलिस्तीन में हमास की विजय से भी मध्य-पूर्व में अमेरिका की स्थिति और डावाँडोल हो गई है। अमेरिका को उम्मीद थी कि इराक़ में शिया-सुन्नी और कुर्द-सुन्नी अन्तरविरोधों का लाभ उठाकर वह अपनी स्थिति को वहाँ मज़बूत बनाए रखेगा। लेकिन ऐसा कर पाना उसके लिए हर दिन के साथ असम्भव होता जा रहा है। एक ओर तो प्रतिरोध-युद्ध में शियाओं का भी एक बड़ा हिस्सा अमेरिका के ख़िलाफ़ शामिल हो गया है, वहीं कुर्दों का भी अब मोहभंग हो रहा है और वे इस बात को समझते जा रहे हैं कि अमेरिका उनका सच्चा हमदर्द और कुर्दिस्तान की माँग का सच्चा हिमायती नहीं है। बल्कि उन्हें इराक़ में अपनी जान बचाने के लिए अमेरिका सुन्नियों के ख़िलाफ़ इस्तेमाल कर रहा है। ईरान के ख़िलाफ़ अमेरिका के रवैये के कारण भी इराक़ के शियाओं का एक हिस्सा अमेरिका के ख़िलाफ़ होते जा रहे हैं। वहीं स्वयं ईरान भी इस कारक को समझ रहा है और मौका पड़ने पर वह इराक़ में अमेरिकी साम्राज्यवाद से नफ़रत करने वाले शियाओं को अमेरिका के ख़िलाफ़ खुलकर और सैन्य रूप में खड़ा कर सकता है। इराक़ में अमेरिका की लाख कोशिशों के बाद भी आज़ादी के लिए लड़ रही इराक़ी जनता के हमले कम होने का नाम नहीं ले रहे हैं। उल्टे बढ़ते जा रहे हैं। खुद एक अमेरिकी जनरल के बयान के मुताबिक, **"हम इस प्रतिरोध को नहीं कुचल सकते। उन्हें जनता का समर्थन हासिल है। हम उन्हें तितर-बितर करते हैं तो वे जनता के बीच खो जाते हैं और फिर से शस्त्र-सज्जित होकर नई ऊर्जा के साथ हम पर हमले शुरू कर देते हैं।"** इस बयान में अमेरिका के सैनिकों का एक भय नज़र आ रहा है जिससे उसी भय की गंध आ रही है जो वियतनाम में गए अमेरिकी सैनिकों में समा गया था।

इराक़ी जनता के अलावा फ़िलिस्तीनी जनता के संघर्ष को कुचलने में भी अमेरिका असफल रहा है। फ़िलिस्तीनी जनता के दमन के कई दशकों के बाद भी अमेरिकी साम्राज्यवाद और इज़रायली जियनवाद के मंसूबे पूरे नहीं हो पा रहे हैं। वहाँ चुनाव में समझौतापरस्त पीएलओ नेतृत्व की पराजय और हमास की विजय से यही बाद जाहिर होती है। हमास एक इस्लामी संगठन है जो अमेरिका और इज़रायल के दमन का सैन्य और जुझारू तरीके से विरोध करता आया है। फ़िलिस्तीनी जनता ने दशकों से जो अमानवीय दमन और उत्पीड़न झेला है उसके कारण हमास उनके बीच लोकप्रिय होता गया। हालाँकि फिलिस्तीनी जनता अपने धर्मनिरपेक्ष मूल्यों के लिए जानी जाती है। लेकिन फिर भी वह हमास के पक्ष में जाकर खड़ी हुई क्योंकि कारगर ढँग से अमेरिकी साम्राज्यवाद का विरोध और इज़रायली जियनवाद का विरोध वही कर रहा था। दूसरी ओर फ़िलिस्तीनी जनता के सामने था पीएलओ की समझौता-परस्ती और अवसरवाद, उसका नैतिक पतन और भ्रष्टाचार। यह तीसरी दुनिया के रैडिकल बुर्जुआ वर्गों के पतन की उसी पुरानी कहानी का दुहराव था। तमाम देशों में एक दौर में साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ एक वास्तविक संघर्ष चलाने के बाद वहाँ का रैडिकल बुर्जुआ वर्ग समझौता-परस्त हो जाता है और कोई मध्य मार्ग अपनाकर जनता की आकांक्षाओं के साथ ग़द्दारी करता है। निश्चित रूप से पीएलओ की शुरुआत एक ऐसे संघ के रूप में हुई थी जिसमें ईमानदार रैडिकल बुर्जुआ ताकतें, कम्युनिस्ट और अन्य कई विचारधाराओं के लोग थे। लेकिन पीएलओ में मौजूद कम्युनिस्ट भी मध्य वर्गीय रैडिकलिज़्म से ज्यादा कुछ नहीं दे पाए। नतीजतन अमेरिकी साम्राज्यवाद और इज़रायली ज़ियनवाद के ख़िलाफ़ नफ़रत फ़िलिस्तीनी जनता को हमास की ओर ले गयी। दूसरी ओर हमास ने यह साबित किया कि उसने इन्तिफ़ादा से ज्यादा सबक लिये हैं। हमास ने कल्याणकारी नीतियों द्वारा जनता का समर्थन जीता। शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में तमाम सुधार किये गए और लगातार जनता का भरोसा जीता गया।

(पेज 21 पर जारी)

अरब में फँसा अमेरिकी साम्राज्यवाद के रथ का चक्का

(पेज 15 से जारी)

दूसरी ओर फ़िलिस्तीन को बाहर से अमेरिका के प्रतिद्वन्द्वियों से भी समर्थन मिल रहा है। यूरोपीय संघ ने हमास के आने के बाद फ़िलिस्तीन को वित्तीय सहायता बंद की तो रूस ने तत्काल हमास को वित्तीय सहायता देनी शुरू कर दी।

एक बात अब बहुत साफ़ तौर पर दिखलाई पड़ रही है। मध्य-पूर्व की जनता किसी भी दमन की सूरत में अमेरिकी साम्राज्यवाद के सामने घुटने टेकने वाली नहीं। एक और सम्भावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता। इराक़ी और फ़िलिस्तीनी जनता का जो भाईचारा है वह एक सम्पूर्ण अरब की अमेरिका-ब्रिटेन विरोधी धुरी में भी तब्दील हो सकता है। इराक़ी जनता के स्वतंत्रता-संघर्ष और फ़िलिस्तीनी जनता के संघर्ष को पूरे अरब की आम जनता का ज़बरदस्त समर्थन और हमदर्दी हासिल है। एक बाधा यह है कि नेतृत्वकारी शक्ति के रूप में सर्वहारा वर्ग इन दोनों देशों में कमज़ोर है। लेकिन अगर सर्वहारा के रूप में नेतृत्वकारी शक्ति कमज़ोर भी रहती है तो भी यह नहीं कहा जा सकता कि स्थितियाँ बदलेंगी नहीं। क्योंकि जब अन्तरविरोधों में विस्फोट होता है तो जो शक्तियाँ तैयार नहीं होतीं वे तैयार हो जाती हैं, नहीं तो उनकी जगह कोई और शक्ति ले लेती है।

आज अरब विश्व और उसमें अमेरिकी घुसपैठ के ख़िलाफ़ जनता की गहरी घृणा और नफ़रत को देखते हुए एक बात कही जा सकती है कि अमेरिका मध्य-पूर्व में अपनी कब्रगाह बनाने में लगा हुआ है। और अब खाड़ी के पार जिस तरह वह ईरान से उलझ रहा है उसे देखकर एक सम्भावना यह भी उभर रही है उसकी स्थिति यहाँ वियतनाम से भी बुरी हो जाय। अमेरिका में बैठे समझदार नीति-निर्माता भी यह समझ रहे होंगे लेकिन दिक्कत यह है कि साम्राज्यवाद को साम्राज्यवादी नहीं संचालित करते हैं बल्कि साम्राज्यवाद यानी वित्तीय पूँजीवाद, साम्राज्यवादियों को संचालित करता है। और पूँजीवाद की अपनी एक गति होती है। वह होती है अपने ही नाश की ओर! अमेरिकी नीति निर्माता चाहें तो भी मध्य-पूर्व से कम-से-कम बाइज़्ज़त तो नहीं निकल सकते। ईरान एक बार पहले भी अमेरिकी साम्राज्यवादी कूटनीति को 1977 की क्रान्ति के दौरान शिकस्त दे चुका है।

अरब विश्व का घमासान स्वभाव से सिर्फ़ अरब का नहीं है। यह पूरी दुनिया में ही अमेरिका की स्थिति को ख़राब कर रहा है। अरब में उलझे होने के कारण ही अमेरिका अपनी नाक के नीचे ही लातिनी अमेरिका में जो चल रहा है उसके ख़िलाफ़ कुछ नहीं कर पा रहा है। वेनेज़ुएला ने अपने तेल भण्डार को राष्ट्रीकृत कर दिया जिससे वह विश्व तेल बाज़ार में हलचल पैदा करने की स्थिति में पहुँच गया है। अभी मिली ख़बरों के मुताबिक इस दिक्कत से निपटने के लिए अमेरिका ने अपने यूरोपीय मित्रों पर इस बात का दबाव डाला है कि वे क्यूबा से अपने आर्थिक सम्बन्ध घटाकर नगण्य कर दें। लेकिन इस दबाव का लन्दन के अलावा किसी और यूरोपीय शक्ति पर ज़्यादा असर पड़ने की सम्भावना कम है। व्यापक तौर पर ईरान मसले पर यूरोपीय संघ फ़िलहाल अमेरिका के साथ है। अरब समस्या पर भी वह या तो चुप रहता है या भुनभुनाते और मिनमिनाते हुए अमेरिका की शिकायत करता है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि अन्तरराष्ट्रीय साम्राज्यवादी ताकतों की कुत्ताघसीटी में वह अमेरिका का पिछलग्गू बन गया है। वह भी बड़ी सावधानी से अपना नफ़ा-नुकसान नापकर फ़िलहाल अमेरिका के साथ मुद्दा-आधारित एकता बनाए हुए है। कहने की ज़रूरत नहीं है कि यह स्थिति अस्थायी है। दूसरी ओर रूस-चीन धुरी एंग्लो-अमेरिकी धुरी के समक्ष लगातार बाधाएँ उपस्थित कर रही है। ऐसे में ईरानी राष्ट्रपति अहमदीनेजाद ने जो बात अपनी ज़मीन से कही, जिस ज़मीन से शायद हम इत्तेफ़ाक न रखें, वह बात एक दूसरी ज़मीन से सही ही लगती है। अहमदीनेजाद ने अमेरिका को एक पतित होती मरणासन्न शक्ति बताया था। विश्व साम्राज्यवाद के पतन के बारे में तो तब तक आधिकारिक ढँग से कुछ नहीं कहा जा सकता, जब तक कि तीसरी दुनिया की जनता क्रान्तियों के नये संस्करण रचने के लिए अपने आपको संगठित और गोलबन्द नहीं करती। लेकिन विश्व साम्राज्यवाद के चौधरी अमेरिका की चौधराहट पर ख़तरा तो मण्डराने लगा है। आर्थिक रूप से भी और राजनीतिक रूप से भी।

घोषणापत्र : प्रपत्र 1

पत्रिका का नाम	- आह्वान कैम्पस टाइम्स
प्रकाशन का स्थान	- गोरखपुर
प्रकाशन अवधि	- त्रैमासिक
प्रकाशक/स्वामी का नाम	- आदेश सिंह
राष्ट्रीयता	- भारतीय
पता	- 'संस्कृति कुटीर', कल्याणपुर, गोरखपुर
मुद्रक का नाम	- आदेश सिंह
राष्ट्रीयता	- भारतीय
पता	- 'संस्कृति कुटीर', कल्याणपुर, गोरखपुर
सम्पादक का नाम	- अभिनव
राष्ट्रीयता	- भारतीय
पता	- बी-100, मुकुन्द विहार, करावल नगर, दिल्ली

मैं, आदेश सिंह, एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार सत्य ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

हस्ताक्षर

आदेश सिंह

दिनांक : 31.03.2006

प्रकाशक/मुद्रक/स्वामी